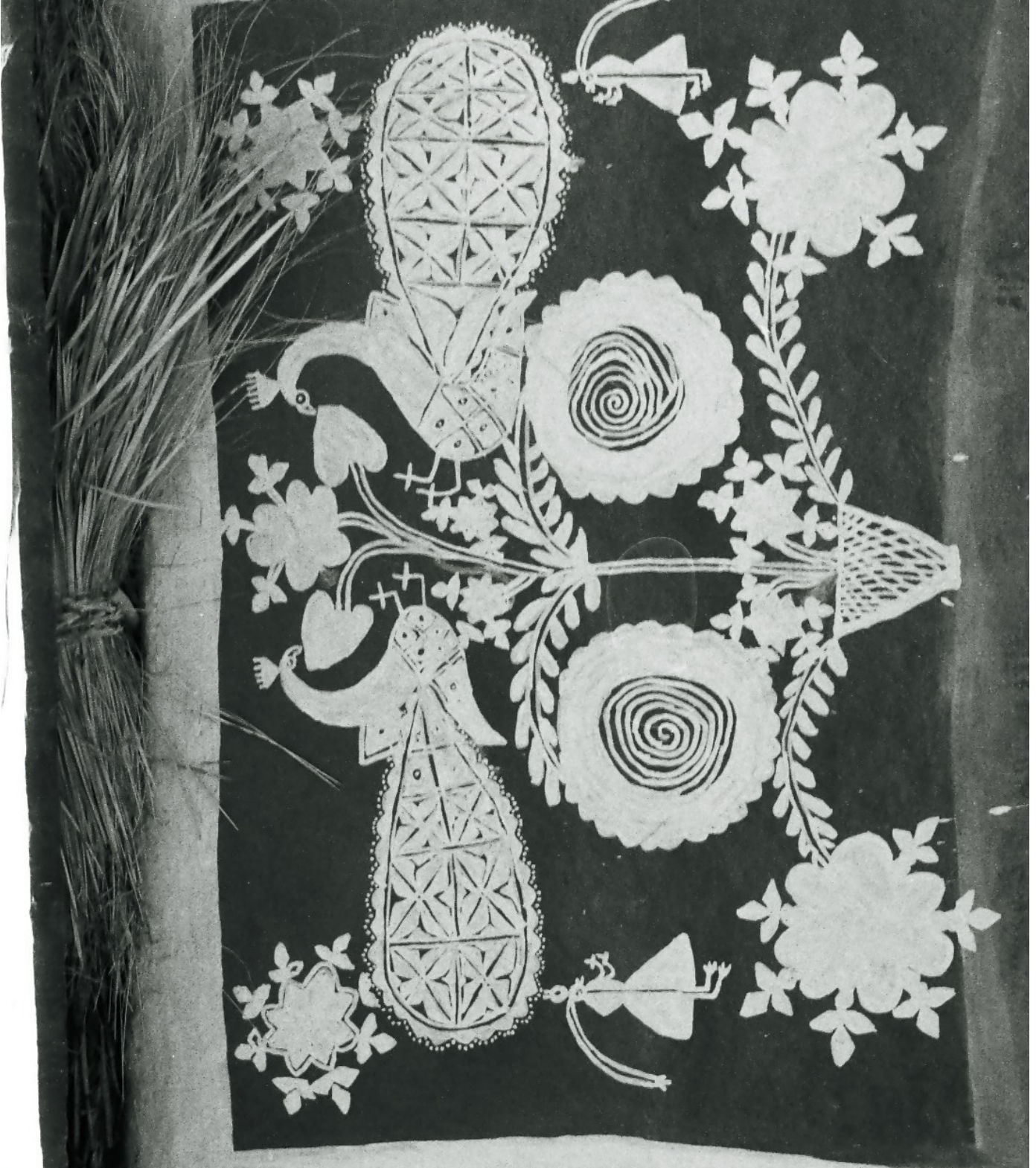

मोरंगे

मार्च 10

इस बार

कविताएँ

क्यों ? चूहा, बिल्ली, बंदर
चार चूहे थे अरे रे आई बस
सब देशों में पानी है दु–दुम दु–दुम

कहानियाँ

मन की बात जलेबी
चूहा, साँप और मोर मकड़ी भी नाचने लगी

याद की धूप–छाँव में

तीसरी बार वापस नहीं आया
पिटाई के दो किस्से
काला चाँद

बात लै चीत लै, खिड़की व अन्य स्तम्भ

वर्ष 1 अंक 9

सम्पादन : प्रभात
सहयोग : भारती, कमलेश, मीनू मिश्रा, रंजीता
डिज़ाइन : शिव कुमार गाँधी
आवरण पर माँडना मदन मीणा के सौजन्य से
प्रूफ : नताशा
वितरण : लोकेश राठौर
प्रबंधन :मनीष पांडेय
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र,3/155,
हाउसिंग बोर्ड,
सवाईमाधोपुर, राजस्थान

'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउंडेशन'
आस्ट्रेलिया के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

कविताएँ

चूहा, बिल्ली, बंदर

चूहा बैठा देख रहा था
इतने में ही बिल्ली आई
बिल्ली बोली मैं आ जाऊँ
पकड़ पूँछ तुझको खा जाऊँ
चूहा पूँछ उठाकर भागा
बिल्ली उसके पीछे भागी
चूहा भागा घर के पीछे
बिल्ली भागी छत के नीचे
तभी कहीं से टपका बन्दर
चूहा बिल्ली भागे अन्दर

नरेश गुर्जर, उम्र–9 वर्ष,
समूह–बादल

चार चूहे थे

चार चूहे थे
सोच रहे थे

पहले मैं पहुँचूँ बाज़ार
पहले मैं पहुँचूँ बाज़ार

क्योंकि जो आगे जाएगा
आठ मिठाई वो खाएगा

जो नंबर दो पर आएगा
वो केवल केले खाएगा

नंबर तीन पे जो आएगा
वो केवल नमकीन खाएगा

जो सबसे पीछे आएगा
वो केवल हड्डी खाएगा

इतने में आ धमकी बिल्ली
खूब उड़ाई उनकी खिल्ली

अब तुम बच पाओ ना शायद
चूहे झटपट हो गए गायब

माया मीणा, उम्र–13 वर्ष, समूह–सागर, जगनपुरा

दु–दुम दु–दुम

हाथी आया स्कूल में
संग में लाया मोर
हाथी ने दिया मोर को धक्का
मोर ने दिया हाथी को धक्का
दु–दुम दु–दुम दु–दुम दु–दुम

नंदिनी, उम्र–तीन वर्ष,
बालमंदिर

सब देशों में पानी है

सब देशों में पानी है
भोली मेरी नानी है
बुढ़िया एक सयानी है
उसने कही कहानी है

अब सब गाँवों में है नल
लेकिन मेरा गाँव बोदल
बस बोदल में नल नहीं
ये तो कोई हल नहीं

राजेन्द्र गुर्जर,उम्र–10 वर्ष,
समूह–बादल, बोदल

अरे रे आई बस

अरे रे आई बस
भरी है ठसाठस
चढ़ो रे सटासट
चलेगी फटाफट

ये बोली भर्र–भर्र
ये दौड़ी ढर्र–ढर्र
रुकी है आके थर्र
सवारी उतरी सर्र

दूकानें सजी प्यारी
खाने की चीजें सारी
आँखें है झपाझप
खाओ रे गपागप

दिलराज मीना, उम्र–11 वर्ष,
समूह–झील, जगनपुरा

खिल्लू

आओ भाई खिल्लू

अभी तो की थी मिल्लू

भरा नहीं क्या दिल्लू

प्रभात

खिड़की

फ़िलिपोक

एक लड़का था। उसका नाम था फ़िलिपोक। एक बार सब बच्चे स्कूल जा रहे थे। फ़िलिपोक भी टोपी उठाकर उनके पीछे जाने लगा। तभी माँ ने कहा, ''तू कहाँ जा रहा है, फ़िलिपोक?''
''स्कूल।''
''पर तू तो अभी छोटा है।'' और माँ ने उसे घर पर ही रोक लिया। दूसरे सब बच्चे स्कूल चले गये। पिता सुबह–सवेरे ही जंगल में चला गया था। अब कुछ समय बाद माँ भी दिहाड़ी पर काम करने चली गयी। घर में फ़िलिपोक और बूढ़ी दादी ही रह गये। फ़िलिपोक अकेले में ऊबने लगा, क्योंकि दादी फिर सो गयी थी। उसने अपनी टोपी ढूँढनी चाही। अपनी तो नहीं मिली, पर पिता की पुरानी टोपी ज़रूर मिल गयी। फ़िलिपोक उसे ही पहनकर स्कूल की ओर चल पड़ा।

स्कूल गाँव के बाहर गिरजाघर के पास था। जब फ़िलिपोक अपने मुहल्ले से गुज़र रहा था तो कुत्तों ने उसे नहीं छुआ, क्योंकि वे उसे जानते थे। पर जैसे ही वह पराये मुहल्ले में पहुँचा, छोटा सा जुच्का उछलकर भौंकने लग गया और उसके पीछे–पीछे बड़ा कुत्ता बोल्चोक भी ज़ोर–ज़ोर से भौंकने लग गया। फ़िलिपोक भागा। कुत्ते भी उसके पीछे–पीछे। फ़िलिपोक चिल्लाने लगा और ठोकर खाकर गिर पड़ा। एक किसान ने आकर कुत्तों को खदेड़ा और फ़िलिपोक से पूछा, ''तू कहाँ अकेले भाग रहा है?'' फ़िलिपोक ने कोई जवाब नहीं दिया और

कोट के पल्लू समेट कर सिर पर पैर रखकर भागा। वह स्कूल के पास पहुँच गया। बरामदे में कोई नहीं था और भीतर से बच्चों की आवाज़ सुनायी दे रही थी। एकाएक फ़िलिपोक को डर लगने लगा कि अगर मास्टर जी ने उसे भगा दिया तो?वह सोचने लगा कि क्या करे। वापस लौटता है, तो कुत्ते फिर काटने को दौड़ेंगे, और स्कूल में जाता है, तो मास्टर जी से डर लगता है। तभी वहाँ से बाल्टी लिये हुए एक औरत गुज़री और कहने लगी, ''सब पढ़ रहे हैं। तू क्यों यहाँ अकेला खड़ा है?'' फ़िलिपोक स्कूल में चला ही गया। ड्योढ़ी पर उसने टोपी उतारी और दरवाज़ा खोला। सारा स्कूल बच्चों से भरा हुआ था। सभी शोर मचा रहे थे और लाल मफ़लर पहने हुए मास्टर जी बीच में चल रहे थे।

''क्या बात है?'' फ़िलिपोक को देखकर मास्टर जी ने पूछा। फ़िलिपोक ने टोपी कसकर पकड़ ली और कुछ जवाब नहीं दिया। ''तुम कौन हो?'' फ़िलिपोक फिर कुछ नहीं बोला। ''क्या गूँगे हो?'' फ़िलिपोक इतना डर गया था कि उसके मुँह से आवाज़ भी न निकल सकी। ''ठीक है, बोलना नहीं चाहते, तो घर जाओ।'' फ़िलिपोक को बोलकर खुशी ही होती, पर डर के मारे आवाज़ ही अटक गयी थी। उसने मास्टर जी की ओर देखा और रो पड़ा। मास्टर जी को उस पर दया आ गयी। उन्होंने उसका सिर सहलाया और दूसरे बच्चों से पूछा कि, ''यह लड़का कौन है?''
''यह कोस्त्या का भाई फ़िलिपोक है। बहुत समय से स्कूल आना चाहता था, पर माँ आने ही नहीं देती। आज चुपके से भाग आया है।''
''ठीक है, जाओ अपने भाई के पास बैठ जाओ। मैं आज तुम्हारी माँ से बात करूँगा कि तुम्हें भी स्कूल आने दिया करें।''

और मास्टर जी फ़िलिपोक को अक्षर दिखाने लगे। पर फ़िलिपोक उन्हें पहले से ही जानता था और थोड़ा बहुत पढ़ भी लेता था। ''बताओ, तुम्हारा नाम कैसे लिखा जाता है?''
''फ़–इ फ़ि, ल–इ लि, प–ओ पो और क, फ़िलिपोक'' फ़िलिपोक बोला। सब हँस पड़े। ''शाबाश,'' मास्टर जी ने कहा। ''किसने सिखाया है तुम्हें ?''
फ़िलिपोक अब डर नहीं रहा था और बोला, ''कोस्त्या ने। मैं तेज़ हूँ और सब तुरंत समझ जाता हूँ। आपने देखा नहीं कि मैं कितना चतुर हूँ।'' मास्टर जी हँस पड़े और बोले, ''प्रार्थना जानते हो?''
फ़िलिपोक ने बताया कि जानता है और सुनाने भी लगा। पर हर शब्द को वह गलत ढंग से बोल रहा था। मास्टर जी ने उसे रोक दिया और कहा, ''तुम अभी शेखी नहीं बघारो। अभी तुम्हें बहुत सीखना है।'' तब से दूसरे बच्चों के साथ फ़िलिपोक भी स्कूल जाने लगा।

(खिड़की स्तम्भ में पाठक पहले भी लेव तोलस्तोय की कहानी पढ़ चुके हैं। लेव तोलस्तोय की यह एक और कहानी हम उनकी किताब शिक्षा शास्त्रीय रचनाओं से साभार यहाँ दे रहे हैं।)

मन की बात

एक बार एक बहुत सुन्दर लड़की थी। वह जंगल में जा रही थी। उसे एक बकरी का बच्चा दिखाई दिया। वह उसे गोद में उठाकर खिलाने लगी। फिर उसने सोचा कि इसे घर ले जाकर खिलाया करूँगी। वह उसे घर ले आयी और उसे चारा काट कर चराने लगी। जब बकरी के बच्चे ने चारा चर लिया तो लड़की ने उसे पानी पिलाया।

एक दिन सुबह–सुबह बहुत ज़ोर से बरसात आई। बकरी का बच्चा बाहर रह गया तो लड़की ने सोचा, 'बहुत भीग रहा है। इसे लेकर आती हूँ।' वह उसे लेने गई तो खुद भी बहुत भीग गई। जब बरसात रुक गई तो उसने सोचा, 'अब नहाने चलती हूँ।' लेकिन वह ऐसा सोचकर घबरा गई कि बकरी के बच्चे को बिल्ली खा गयी तो क्या होगा?उसने तय किया, 'मैं तो चरी में पानी लाकर घर पर ही नहा लूँगी और बकरी के बच्चे को भी नहला दूँगी।'

एक दिन वह खाना बना रही थी। उसने सोचा कि आज इसे रोटी खिलाऊँगी। रोटी हो गयी तो वह बच्चे को रोटी खिलाने लगी। वह खाने लगा। पेट भर गया तो वह मेंह–मेंह बोलने लगा। लड़की ने कहा, ''आप शायद पानी पियोगे?'' बकरी के बच्चे ने फिर मेंह–मेंह बोला। लड़की कटोरे में पानी भरकर लाई और उसके आगे रख दिया। बकरी का बच्चा कटोरे का पूरा पानी पी गया।

धीरे–धीरे वे दोनों एक–दूसरे के मन की बात समझने लगे थे।

सीमा मीणा, उम्र–11 वर्ष, समूह–झील

मकड़ी भी नाचने लगी

एक गाँव था। उस गाँव में एक आदमी रहता था। उसके पास एक बकरी थी। वह रोज़ बकरी चराने जाता था। हाथ में लाठी लेकर जाता था। एक रोज़ वह बकरी चरा कर लौटा तो उसने देखा कि उसके घर में एक मकड़ी जाला धर रही है। वह इस बात से इतना खुश हुआ कि घर में दरवाज़े के पास में नाचने लगा।

उसकी तरफ़ पेड़ भी देख रहे थे और मुस्कुरा रहे थे। वे भी हँसने लगे और नाचने लगे। पेड़ों को और उसको नाचता देखकर बकरी भी नाचने लगी। मकड़ी ने देखा कि इस गाँव में क्या हो गया है? जाला धरने की बजाय मकड़ी भी नाचने लगी।

प्रियंका मीणा, उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर, जगनपुरा

जलेबी

एक सेठ था। उसके एक सेठानी थी। सेठ एक दिन बाज़ार में दुकानदार से गपशप मार रहा था। दुकानदार ने कहा, ''तू ये क्या कर रहा है?'' सेठ ने कहा, ''अरे, मैं तो आप से गपशप कर रहा हूँ।'' दुकानदार ने कहा, ''अरे, यहाँ से चल तू, मेरा दिमाग क्यों फेल कर रहा है?'' सेठ आगे बढ़ गया और एक दुकान पर जलेबी खाने लगा। जलेबी खाकर घर आ गया। सेठानी ने सेठ से कहा, ''खा आए जलेबी?'' सेठ ने सेठानी को पीट दिया। कहने लगा, ''जब मैं जलेबी खा आया हूँ तो तू पूछती क्यों हैं?'' सेठानी रोने लग गई। फिर सेठ ने सेठानी से कहा, ''मत रो।'' सेठानी चुप हो गई और चुप ही रही। सेठ ने कहा, ''अब ऐसे चुप क्या बैठी है, कुछ बोल तो सही।'' सेठानी बोली, ''खा आए जलेबी?''

सेठ के तन–बदन में आग लग गई।

रिंकू मीणा, उम्र–9 वर्ष, समूह–रिमझिम, जगनपुरा

चूहा, साँप और मोर

एक बार एक चूहा, साँप और साँप के बच्चे को पकड़ने के लिए भाग रहा था। तभी चूहे को पेड़ दिखा। पेड़ पर मोर बैठा था। चूहे को देखकर मोर चिल्लाया, ''किचू–किचू।'' चूहे ने मोर को देखा और सोचा कि मोर मुझे साँप और उसके बच्चे को मारता देख लेगा तो सबको बता देगा। लेकिन चूहे को ज़ोर से भूख लगी थी। इसलिए अब उसने सोचा कि मैं फूल ही खा लेता हूँ। वह फूल और फूल के पौधे दोनों को खा गया और चला गया।

बच्चे फूल लेने आए तो उनको फूल वहाँ नहीं मिला। बच्चों ने फूल को ढूँढ़ा तो फूल उनको चूहे के पेट में मिला। बच्चों ने चूहे को पकड़ कर फूल निकाल लिया और फिर उसको छोड़ दिया। चूहा अपने घर चला गया। बच्चे भी घर चले गये। मोर भी पेड़ पर सो गया।

रीना, उम्र–5 वर्ष, समूह–महक, जगनपुरा

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1 हरी–हरी जाली, मोत्याँ जाली, चाँद की बहन, सूरज की साली।
2 हर्‌यौ मणियौ, लाल मणियौ, खोल्या सूँ न खूटै, फरगा लाख सुनार।
3 राजा के राज में नहीं, माली के बाग में नहीं
फोड़े तो गुठली नहीं, खाये तो स्वाद नहीं।
4 चलाती आयी चटकी, भर लायी मटकी, घर आर नटगी।
5 एक न्हार के हाथ कोनी पूँछ से पानी पीवै।

ज्योति मीणा, उम्र–10 साल, समूह–झील,
बद्री मीणा, शाला–सहायक, कटार–फरिया

कुछ और भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1 बाज और पेड़ : बाज उड़ते–उड़ते थक गए, उन्होंने सोचा चलो एक पेड़ पर बैठा जाए। नीचे कुछ पेड़ थे, अगर एक–एक बाज एक–एक पेड़ पर बैठता है, तो एक बाज बच जाता है। बताओ कितने बाज हैं और कितने पेड़ हैं ?

2 दो गड़रिए : दो गड़रिए भेड़ें चरा रहे थे। एक गड़रिया दूसरे से बोला, ''अगर तू मुझे एक भेड़ दे दे, तो मेरे पास तेरे से दुगुनी भेड़ें हो जाएँ।'' बताओ दोनों गड़रियों के पास कितनी–कितनी भेड़ें थीं?

3 कितने हंस : हंसों का झुण्ड उड़ता जा रहा था, सामने से एक दूसरा हंस आ रहा था। वह बोला, ''नमस्ते, सौ हंसो।'' हंसों ने जवाब दिया, ''नहीं, हम सौ नहीं हैं। अगर हम जितने हैं, उतने ही हमारे साथ और आ मिलें और हमारे से आधे और जाएँ, फिर हमारे से चौथाई और आ जाएँ और फिर तुम भी आ मिलो, तब हम सौ हो जाएँगे।'' बताओ कितने हंस थे?

4 सिर और पैर : अहाते में मुर्गियाँ दाना चुग रही हैं और खरगोश उछल–कूद कर रहे हैं। कुल दस सिर और चौदह पैर हैं। बताओ कितने खरगोश हैं और कितनी मुर्गियाँ?

5 कितनी गेंदें : एक झोले में दस पीली गेंदें हैं, दस लाल, पाँच हरी और पाँच काली। आँखें मूँदकर झोले में से कम से कम इतनी गेंदें निकालो कि उनमें एक ही रंग की सात गेंदें हों ?

(ये पहेलियाँ **वसीली सुखोम्लीन्स्की** की किताब **बाल हृदय की गहराइयाँ** से साभार। तुम अपने आस–पास के लोगों से इन पहेलियों को बूझोगे तो वे तुम्हें इनके जवाब तो बता ही देंगे। साथ में ऐसी ही ढेरों पहेलियाँ और भी बताएँगे। अपने आस–पास के लोगों से उन पहेलियों को इकट्ठा कर मोरंगे को भेजो ताकि हम तुम्हारे दूसरे दोस्तों को उनमें उलझा सकें। –सम्पादक)

नरेश गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–बादल की शुरू की गई इस बात को आगे बढ़ाते हुए एक कहानी लिखो। कहानी का शीर्षक भी तुम्हें ही लिखना है–

एक बार एक स्कूल में बच्चे पढ़ाई कर रहे थे। मैडम ने एक बच्चे से कहा, ''एक छड़ी ले आओ।'' मैडम अगर डण्डा कहती तो वह लड़का तुरंत तोड़कर ला देता। पर छड़ी शब्द उसने पहली बार सुना था। उसे लगा मैडम से कहने में चूक हो रही है। मैडम को कहना चाहिए छेड़ी लेकिन कह रही हैं छड़ी। उसने अधिक पूछताछ नहीं की और एक छेड़ी यानी बकरी का कान पकड़ कर स्कूल में ले आया। ....

चेतराम मीना, उम्र–12 वर्ष, समूह–सागर की इस तुकबंदी को आगे बढ़ाओ–

मैंने इसे लिखा है अधूरा
कर दो इसको आप पूरा
दुर्गा जी है लम्बा–पूरा
प्यारा प्यारा भूरा–भूरा
सुबह–सुबह ही है आ जाता
दिन भर हमको खूब पढ़ाता

कुछ हमने बढ़ायी
कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात,
गीत में कड़ी लगाओ

दिसम्बर 09 अंक में छपे चित्र पर यह कविता **दीपक मीणा,** समूह–सागर, जगनपुरा ने भेजी है–

कमरा

गोल गोल हैं कान
चेहरे की है शान
गोल गोल आँख
पान जैसी नाक
उंगली नहीं पाँच
बटन रहे हैं नाच
चूहे के है पूँछ
लड़के के नहीं मूँछ
कमरे में है खिड़की
खिड़की में है मकड़ी

तीसरी बार वापस नहीं आया

उस दिन हमारा रविवार का अवकाश था। मेरे दोस्त जंगल में बेर खाने जा रहे थे। मैं भी उनके साथ चल दिया। आधे घंटे में हम जंगल में पहुँच गये। रास्ते में हममें से चार बड़े–बड़े दोस्त बिछड़ गये। हम छोटे–छोटे भी उनसे बिछड़ गये। कोई एक घंटे तक हमने जंगल में बेर खाए। बेर तोड़े। अब हम बेर लेकर वापस लौट रहे थे। रास्ते में एक बाँध था। हमने देखा कि हमारे वे दोस्त जो हमसे बिछुड़ गए थे, वे यहाँ बाँध में नहा रहे थे। हमने सोचा चलो हम भी नहा लें और हम भी नहाने लगे। हम जब नहा रहे थे तो सब मस्ती करने लगे। एक–दूसरे के गारे की देने लगे। परेशान होकर हम पानी से बाहर आ गये। हम सब लड़कों में सबसे बड़ा दीपक था। उसे हम दीपू कहते थे। दीपू और राजू बाँध के अन्दर ही रहे। दीपू पानी के अन्दर तैरने लगा। वह दो बार तो पानी में डुबकी लगाकर बाहर आ गया लेकिन तीसरी बार वापस नहीं आया। उसे डूबे हुए पाँच मिनट हो गए। वह बाहर नहीं आया तो एक राजू नाम का लड़का जो पानी में ही था वो उसे ढूँढने लगा। दीपू पानी के अन्दर औंधा पड़ा था। राजू ने हमसे ज़ोर–ज़ोर से कहा, ''चारों जल्दी अंदर आ जाओ। दीपू डूब गया।'' किसी को भी राजू की बात सही नहीं लगी। लेकिन मुझे उसकी बात सही लगी। मैं एकदम से पानी में कूद गया। मेरे पीछे से एक और छोरा भी कूद गया और हम उसे निकाल लाये। हमने देखा कि जैसे वो मर गया।

वह सोलह वर्ष का था। आदर्श विद्या मंदिर में पढ़ता था। धड़कन नहीं चल रही थी। मुझे याद था कि मुझे मेरी मैडम ने पाठ पढ़ाया था कि अगर कोई पानी में डूब जाए तो उसे कैसे बचाना चाहिए। मुझे वही याद आ रहा था। मैंने हरीश से कहा कि इसका पेट दबा। तो हरीश ने उसका पेट दबाया। मुँह से सारा पानी निकलने लगा। फिर मैंने हरीश से कहा इसके मुँह में हवा दे। हरीश ने उसके मुँह में हवा दी तो उसे साँस आने लगा। हमारे गाँव का एक बकरी वाला बकरी चरा रहा था। उसके पास मोबाइल था। उसने मोबाइल करके गाँव वालों को सारी घटना बतायी। दीपू के पिताजी, मम्मी, काका, काकी, ताऊजी सब आ गये। उसको ट्रोली में माधोपुर ले गये और आठ दिन बाद वह घर आया। ठीक हो गया था। हम उससे बातचीत करने लगे।

बृजेश गुर्जर, समूह–फूल, कटार–फरिया

पिटाई के दो किस्से

1

एक बार मैं और मेरा छोटा भाई कमरे में सोने गये। मैंने छोटे भाई के बिस्तर ले लिए। उसने पिताजी से कहा, ''पापा, मेरे बलवीर ने दी है।'' पिताजी को पहले से ही किसी बात पर गुस्सा आ रहा था। उन्होंने उठाया डण्डा और मेरे देने लगे। मेरी मम्मी भाग कर आई। मेरे पिता से कहा, ''इसके क्यों दे रहे हो?'' मेरे पिता ने कहा, ''यह काम भी नहीं करता और राजवीर को मारता भी है। इसके तो लक्खण बिगड़ गये हैं।'' मम्मी ने पापा से कहा, ''अब मत दे।'' पापा ने मुझे छोड़ दिया। मैं रोता–रोता सो गया। सुबह हुई तो मम्मी ने रोटी बनाई तो मैंने नहीं खाई। मम्मी ने मेरे से खूब कहा, ''बेटा, रोटी खा ले।'' मैंने रोटी नहीं खायी। उधर से पापा आए। मम्मी ने पापा से कहा, ''बलवीर खाना नहीं खा रहा है।'' पापा ने मेरे से कहा, ''बेटा, रोटी खा ले।'' मम्मी ने भी बार–बार कहा, ''रोटी खा ले। मम्मी–पापा तो ऐसे ही दे लेते हैं।'' मैंने पापा–मम्मी की बात मान ली और रोटी खा ली। आज भी मुझे पापा का डर लगता है।

2

एक बार रामसिंह ने उसकी पत्नी से कहा, ''मैंने तेरा नाम मस्टरोल में लिखवा दिया है। तुझे काम पर जाना है।'' वह तीन दिन तो नरेगा में गई, चौथे दिन नहीं गई। रामसिंह ने कहा, ''आज क्यों नहीं गई?'' रामसिंह की औरत ने कहा, ''मैं तो नहीं जाऊँ।'' रामसिंह ने कहा, ''तू जा, अपने पास कुछ पैसे आ जायेंगे तो अपने काम आयेंगे।'' वह काम पर नहीं गई। रामसिंह ने औरत को इतना मारा कि वह बेहोश हो गई। उसने औरत से यह भी नहीं पूछा कि तू आखिर काम पर क्यों नहीं जाना चाहती? होश आने पर उस औरत ने अपने घर वालों को फ़ोन कर दिया। उसके घर वाले आए और उसे ले गए। उस औरत को तीन–चार महीने हो गए, अभी तक भी नहीं आई। रामसिंह दिल्ली कमाने चला गया। वह भी अभी तक नहीं आया।

बलवीर गुर्जर, उम्र–13 वर्ष, समूह–बादल, बोदल

काला चाँद

शुरू से ही बाऊजी के फौजी अनुशासन के कारण मुझे वो सब करने का अवसर नहीं मिला जो दूसरे बच्चों को बेरोक–टोक करने को मिलता है। मैं अक्सर ही सोचता था कि बाऊजी पुलिस की नौकरी नहीं करते तो वह भी औरों के पिताजी की तरह होते। लोग मेरे पिताजी को बाऊजी कहते थे। इसलिए मैं भी उनको बाऊजी कहता था। दूसरे बच्चों के पिता तो बस सुबह और शाम घर पर रहते थे या फिर सप्ताह में एक दो बार घर आते थे। मेरे बाऊजी तो मेरी खातिर अपनी इच्छा से सेवा निवृति लेकर घर आ गये थे। इसलिए वे हर वक्त घर पर होते थे। मेरे लिए उनके अनुशासन से बचना सम्भव नहीं था। परन्तु बच्चे अपने मन का करने की हिम्मत जुटा ही लेते हैं। या यों कहें की मन जब किसी काम को करने के लिए मचलता है तो फिर वे सब कुछ भुला देते हैं। मैं भुला तो नहीं पाता था परन्तु कुछ मौकों का फ़ायदा उठा लेता था। जैसे, पिताजी बाज़ार चले जाते या सो जाते या होटल पर अखबार पढ़ने जाते तब मैं घर से गायब हो जाता था। उन दिनों मुझे पतंगों का शौक था। आकाश में उड़ती पतंग दिख जाती तो रास्ते पर चलते कदम रुक जाते। नज़र आकाश में उड़ती पतंग पर जम जाती और पैर चलते रहते। कभी किसी साइकिल वाले से टकराता तो कभी किसी खम्बे से। किसी गड्ढ़े या नाली में तो पैर जाता ही रहता था। फिर मुझे कीचड़ सने पैर धोने के लिये प्याऊ पर बनी खेली पर जाना पड़ता था। उन दिनों लोगों के साथ–साथ जानवरों व पक्षियों के पानी की भी व्यवस्था की जाती थी। कभी कोई बड़ी बात तो नहीं हुई पर लगातार ऊपर देखने और धूप में चलने से मेरा मुँह टेढ़ा हो गया। बुखार भी चढ़ गया। कई दिन अस्पताल में रहा और ठीक हो गया। पर बच्चे ये सब याद रखना नहीं चाहते।

हमारे यहाँ राखी पर पतंग उड़ाई जाती है। राखी के दिन बच्चे और बड़े सुबह से शाम तक पतंग उड़ाते हैं। छतों पर लाउड–स्पीकर पर गाने और पतंग–बाज़ी का शोर चारों तरफ़ सुनाई देता है। कहीं लोग ढोल–नगाड़ों के साथ पतंग उड़ाते और नाचते रहते हैं। जिनकी नई–नई शादी हुयी होती वे अपनी ससुराल में जाकर पतंग उड़ाने का आनन्द लेते थे। राखी का दिन जैसे–जैसे नजदीक आता जाता वैसे–वैसे आकाश पतंगों से भरता जाता। ऐसा लगता मानो दिन में तारे चमक रहे हों। पर ये दिन के तारे अलग–अलग रंग और नाम वाले होते थे। मुझे इन तारों (पतंगों) के नाम आज तक याद हैं। दो अलग–अलग रंग के आयताकार टुकड़ों से बनी पतंग 'पट्टी' कहलाती। दो समकोण त्रिभुजों से बनी पतंग 'बहरोड़िया' होती। इसी तरह चाँद, खरबूजा, सूरज, चिड़ा, लँगोट और पूँछड़ी जैसे नामों की पतंग होती थी। बच्चे तो पतंग में लम्बी पूँछड़ी लगाकर उड़ाते थे। एक बार मैंने मेरी

पतंग में गैस वाला गुब्बारा बाँधकर उड़ाया। सब मेरी पतंग को देखने लगे। बड़ा मज़ा आया। उन दिनों लालटेन वाली पतंग भी आती थी। जिसे रात में भी उड़ाया जा सकता था। मुझे 'चाँद' पतंग सबसे अधिक पसंद आती थी। इतना ही नहीं मुझे यह भी पता था कि तेज हवा में उड़ाने के लिए पतंग की आड़ी तूली पतली होगी तो पतंग आसानी से उड़ पाएगी। बीच की तूली (खड़ी वाली) मोटी होने पर पतंग ढील देने से उड़ते–उड़ते अचानक नीचे की तरफ़ गोता खा जाती है। तेज़ हवा में पतंग उड़ाने के लिए पतंग में छोटे–छोटे छेद कर देते हैं। इससे पतंग पर हवा ज़्यादा दबाव नहीं बनाती और छेदों से पार निकल जाती है। मैं चरखा हाथ में लेकर एक हाथ से पतंग उड़ा लेता था। मैं चरखे में सद्दा (धागा) बहुत तेज़ी से लपेटता था। दुकानदार कहता धीरे–धीरे घड़ी बना ताकि मैं खोल तो पाऊँ। मैं तो हाथ से भी घड़ी करना (लपेटना) जानता था। हाथ से घड़ी करने के लिये चिटली उँगली और अँगूठे पर धागा लपेटा जाता है। यह सारा ज्ञान मैंने बाऊजी से बचते हुए ही पाया था। पतंग का शौक इतना था कि मैं घर पर किसी मेहमान के आने की प्रतीक्षा करता ताकि जब वह जाए तो मुझे दस पैसे चीज़ खाने के लिए मिले और मैं पतंग ले आऊँ। सबसे छोटी पतंग पाँच पैसे की आती थी और सबसे बड़ी बीस पैसे की।

मेरे पास जब पतंग नहीं होती तो मैं पतंग लूटने जाता था। जैसे लोग भेड़–बकरों की लड़ाई कराते हैं वैसे ही पतंगों के पेच लड़ाते हैं। दूसरों की पतंग काटने के लिए बढ़िया मांजा लगाया जाता। उन दिनों बरेली का मांजा प्रसिद्ध था। मांजा जितना अच्छा होता उसके दाम उतने अधिक होते। बड़े–बड़े लोग तो पूरी पतंग मांजे के चरखे से उड़ाते थे। मैं तो अपनी पतंग के आगे बीस–तीस हाथ मांजा लगाता और शेष धागा बाँधता था। एक बार मेरे पास धागा नहीं था। तो पतंग उड़ाने के चक्कर में मैंने जीजी की नई की नई गूदड़ी के सारे धागे निकाल कर पतंग से जोड़े और पतंग उड़ाई। जब जीजी को पता चला तो खूब डाँट पड़ी। थप्पड़ भी खाए। जीजी जब ज़्यादा गुस्सा होती तो कहती, ''आने दे बाऊजी को, वो ही तुझे सुधारेंगे।'' परन्तु कभी बाऊजी से मेरी शिकायत नहीं की। शायद वो जानती थी कि बाऊजी डाँटने के साथ–साथ बुरी तरह पीटते भी थे। पर मैं क्या करता? पतंग के आगे मैं सबकुछ भूल जाता था। इकलौता बेटा होने के कारण मेरी अधिक निगरानी रखी जाती थी। तब मैं सोचता मेरे भी भाई होता तो जीजी–बाऊजी का ध्यान मुझ पर कम रहता। पर मैं तो ऐसा सोच ही सकता था।

हमारे यहाँ बड़े–बड़े लड़के भी पतंग के पीछे बच्चों की तरह भागते थे। इतना ही नहीं, बाँस में काँटेदार झाड़ी बाँध कर भागते थे ताकि ज़मीन पर आने से पहले ही पतंग को पकड़ा जा सके। ऐसे धुरन्धरों के बीच मुझे कभी सफ़लता नहीं मिलती थी। इसलिए मैं किसी बड़े धुरन्दर का रखवाला बन जाता था। वह पतंग लूटता और मैं पतंग संभाल कर उसके पीछे–पीछे भागता था। तब वह मुझे एक पतंग देता था। जीजी के पूछने पर कहता कि यह मैंने लूटी है। उन दिनों पतंग लूट लेने की खुशी किसी ओलम्पिक में जीते मैडल से कम नहीं थी। पतंग के शौक के कारण मुझे छत पर जाने की मना थी। आए दिन कोई ना कोई लड़का छत या दीवार पर से गिरता था। परन्तु छत पर चढ़कर पतंग उड़ाने में बड़ा मज़ा आता था।

जब हवा नहीं चलती थी तो बच्चे ऊँची छत या दीवार पर चढ़कर पतंग उड़ाते। नहीं उड़ने पर दूसरे बच्चों से लम्बी–लम्बी छुट्टी ली जाती थी। छुट्टी ऐसे दी जाती है कि एक बच्चे को पतंग पकड़ कर दूर भेजते हैं फिर से ऊपर छुड़वाते हैं, तब उस पतंग को उड़ाते हैं।

मेरे घर के पास एक बड़ा सरकारी स्कूल है। मैं वहीं जाकर पतंग उड़ाता था। एक बार स्कूल में एक काला चाँद (पतंग का नाम) कट कर आया। उस समय हम तीन लड़के थे। हम तीनों उसके पीछे भागे। मैं तो खाली हाथ ही दौड़ा। परन्तु काले चाँद में आकाशी हवा लग गई थी। इसलिए वह लगातार दूर जाता रहा और हम उसके पीछे जाते रहे। काले चाँद के पीछे भागते–भागते हमारी साँस फूल चुकी थी। कपड़े पसीने से भीग गए थे। पर इस ओर किसी का ध्यान नहीं था। चलते–चलते काला चाँद आर्मी मैदान में आ गया। यह जगह मेरे घर से दो किलोमीटर दूर है। बुरा तो तब लगा जब काला चाँद एक पेड़ पर अटक गया। हममें से एक लड़का पेड़ पर चढ़ना जानता था। परंतु पेड़ की ऊँचाई देखकर उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी। उसने धागे में पत्थर बाँध कर लंगर बनाया और नीचे से ही काले चाँद को उतारने की कोशिश करने लगा। मैं तीनों में सबसे छोटा था। दूसरे लड़के ने पत्थर फेंककर काले चाँद को गिराना चाहा। इससे काले चाँद के फटने की सम्भावना ज़्यादा थी। मेरी नज़र काला चाँद पर थी। मैं पहले पेड़ पर कभी नहीं चढ़ा था। पर काला चाँद को पाने की इच्छा मुझे तैयार करने लगी। मैंने पत्थर फेंकने वाले लड़के से कहा, ''तुम पत्थर मत फेंको, काला चाँद फट जाएगा। अगर तुम मुझे कंधे पर बिठाकर उचका दो तो मैं इस काले चाँद को उतार लाऊँगा। अगर यह काला चाँद उतर गया तो मैं इसका मांजा और धागा तुम्हें दे दूँगा।'' थोड़ी देर में वह राज़ी हो गया। उसने मुझे कई बार उचकाया पर मैं ऊपर नहीं चढ़ पाया। इस कोशिश में मेरी कोहनी और घुटने छिल गये। लेकिन मैंने भी हिम्मत नहीं हारी और उस लड़के को पेड़ से सटा कर खड़ा किया। पहले मैं उसकी पीठ पर चढ़ा। फिर धीरे–धीरे उसके कंधों पर पैर रखकर हाथों से पेड़ का तना पकड़े सीधा खड़ा हो गया। फिर उस लडके ने खुद के हाथों को सीधा किया और मुझे हथेली पर पैर रख कर चढ़ने को कहा। जैसे ही मैंने उसकी हथेली पर पैर रखा उसका हाथ हिलने लगा। मैं भी डर गया। पर नज़र तो ऊपर टिकी थी। धीरे–धीरे मैं उसकी दोनों हथेलियों के सहारे ऊपर चढ़ा। अब हाथ लम्बा करने पर पेड़ का डाला पकड़ में आ गया था। मैंने दोनों हाथ मज़बूती से डाले पर जमा दिए। नीचे खड़ा लड़का थक चुका था। उसने मेरे पैर के नीचे से अपने हाथ हटा लिए। मै अधर–फदर लटक गया। वहाँ से हाथ छोड़ने पर मेरी हड्डी पसली एक हो जाती। मेरे हाथ भी थकने लगे थे। अतः मैंने तने पर पैर जमाकर चढ़ने की कोशिश की और ऊपर चढ़ गया। अब आगे चढ़ना आसान था क्योंकि डाले पतले थे। और उनसे निकलने वाली डालियाँ पास–पास थी। अतः मैं उन पर पैर जमाते हुए ऊपर उस जगह पहुँच गया जिस डाले पर काला चाँद था। चाँद डाले के कोने पर लगी पतली टहनियों पर अटका था। मेरे और चाँद के बीच पाँच हाथ की दूरी थी और इस दूरी में कोई ऐसी डाली नहीं थी जिसे पकड़ कर आगे जाता। काफ़ी देर तक वहीं बैठा रहा। खाली हाथ जाने का मन भी नहीं कर रहा था। इतनी सारी मेहनत जो बेकार जाती। आखिर मैंने भैंस के पैर जैसे डाले पर रेंगकर आगे बढ़ना शुरू किया। इस काम में नज़र डाले पर रखना ज़रूरी था और

डाला मेरे नीचे था। इसलिए जैसे ही नज़र नीचे ज़मीन पर गई तो सबकुछ हिलने लगा। मेरे हाथ–पाँव काँपने लगे। जमीन से इतनी ऊपर बिना किसी जमीन के अधर में बड़ा खतरनाक लग रहा था। मैं एक हाथ आगे सरक चुका था। डर के मारे मैं लम्बा होकर पेट के बल डाले से चिपट गया। वापस जाना खतरनाक था। इसके लिए एक बार सीधा खड़ा होना और डाले पर से दोनों पैरों को पलटना ज़रूरी था। अतः मैंने पेट के बल आगे सरकना तय किया। अगर यह पेड़ भीड़ वाली जगह होता तो लोगों की भीड़ लग जाती और मुझे बचाने की कोशिश भी होती। पर बच्चों के कारनामे एकांत में ही फलते–फूलते हैं। इस काम में तने के छीड़ों ने मेरी नेकर और बनियान को कब फाड़ डाला पता ही नहीं चला।

काला चाँद की चमक अब फीकी पड़ने लगी। मन में एक ही बात थी, बस कैसे भी आगे डाली तक पहुँच जाऊँ ताकि वापस जाने के लिए घूम सकूँ। डाली तक जाते–जाते पेट भी छिल गया था। पर इस समय कहीं से भी दर्द का पता नहीं चल रहा था। पाँच हाथ की दूरी पाँच कोस की दूरी बन गई थी। डाली पर पहुँच कर जान में जान आई। तभी नीचे से आवाज़ आई, ''जल्दी कर, बहुत देर हो गई, घर भी जाना है।'' घर का नाम सुनते ही बाऊजी याद आ गए। पर अब जो करना था वो मैं कर चुका था। काले चाँद को उतार कर एक नज़र देखा। अब चाँद की कीमत कम लगने लगी। जिसके लिए इतनी ऊपर चला आया था। धागे, मांजे की अंटी बनाई और जेब में डाला। पतंग को पीठ पर रखा। तभी नीचे से लड़का बोला, ''ला नीचे गिरा दे।'' पर मुझे उस पर भरोसा नहीं था। वह सामान लेकर भाग सकता था। अकेले में मेरी मुसीबत और बढ़ जाती। अब मुझे पेट के बल वापस नीचे तक जाना था। और इस काम में लगातार नीचे ही देखना था। नीचे देखते ही शरीर में कँपकँपी जैसी लहर दौड़ जाती। मैं जैसे–जैसे आगे बढ़ता गया। मेरी खुशी भी बढ़ती गई। मेरा विश्वास भी बढ़ता गया। मेरे काले चाँद की भी चमक बढ़ने लगी थी। आखिर मैं उस जगह पहुँच गया जहाँ पर उस लड़के ने अपनी मदद से मुझे ऊपर पहुँचाया था। मैंने उससे उतरने के लिए मदद माँगी तो उसने मांजा और धागा माँगा। मैंने वादे के मुताबिक दोनों चीजें जेब से निकाल कर उसे दे दी। उसने पेड़ से सटकर अपने हाथ फैलाए। पर चढ़ने से ज़्यादा डर उतरने में लगता है। मैं नीचे नहीं उतर पाया। तो वह लड़का जाने लगा। उतरना मुझे कठिन लगा। आखिरी क्षणों में की जाने वाली जल्दबाजी मैंने भी दिखाई और ऊपर से कूद गया। पैर और पेट में जोर की धमक लगी। पर कोई और चोट नहीं आई। मेरा काला चाँद, मेरी जीत का सबूत मेरे पास था। वह मेरे फटे कपड़ों और छिले हाथ–पाँवों पर दवा का काम कर रहा था। उस दिन मैंने पहली बार पेड़ पर चढ़ना सीखा था। उसके बाद फिर कभी मैं इतनी ऊपर नहीं चढ़ा। बाऊजी के डर से यह बात मैंने किसी को नहीं बताई। बाऊजी अब बूढ़े हो गए हैं और अब मेरी जगह मेरा बेटा पतंग के पीछे भागता है। उसे देखकर मुझे अपना काला चाँद और वे बातें याद आ जाती हैं।

विष्णु गोपाल, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

ठग और किसान

एक बार एक किसान बैल खरीद कर ला रहा था। उसे रास्ते में तीन ठग मिले। उन्होंने पूछा, ''यह बैल कितने का है?'' किसान ने कहा, ''एक हज़ार रूपैये का।'' ठगों ने कहा, ''इसे हमें दे दे।'' किसान ने कहा, ''ले लो।'' ठगों ने कहा, ''हमारे पिताजी इस बैल का मोल भाव सही करेंगे इसलिए हमारे घर पर चल।'' वे उसको अपने घर पर ले गये। जब वे जा रहे थे बैल ने रास्ते में पेशाब किया। एक ठग ने कहा, ''यह बैल तो फूट गया है। पर चलो कोई बात नहीं। पिताजी ही इसका सही मोल भाव करेंगे।'' उनका पिता बूढ़ा व अंधा था। उसने बैल पर हाथ फेरकर कहा, ''यह तो पचास रुपैये का है।'' किसान समझ गया। ये लोग ठग हैं। ये चार हैं और मैं अकेला हूँ। इनसे नहीं जीत सकते। उसने एक हज़ार के बैल के पचास रूपैये लिए और चला गया।

एक दिन उसने औरत का वेश धारण किया और ठगों के पास चल दिया। वह उनके घर जाकर बोला, ''मैं अकेली हूँ। मेरे आगे–पीछे कोई नहीं है। आप मेरे को अपने घर पर रख लें तो मैं आपकी व आपके पिताजी की सेवा कर दूँगी। मुझे अपनी माँ ही समझना, परायी मत समझना।'' ठगों ने उसे सुबह–शाम की ठंडी–बासी रोटी के बदले में रख लिया। वह उनके घर रहने लगा। एक दिन उसने तीनों बेटों से कहा, ''तुम तीनों यहाँ खाली पड़े–पड़े क्यों रोटी तोड़ते हो?पिताजी की सेवा तो मैं कर लूँगी।''

तीनों बेटे शहर में कमाने चले गये। पीछे से औरत के वेश में छिपे उस किसान ने उस वृद्ध से कहा, ''बोल मेरे बैल की कीमत क्या थी?'' बूढ़ा ठग घबरा गया। उसने एक डंडा उठाया और उस बूढ़े ठग की पिटाई कर दी। उसकी हड्डी तोड़ दी। सारे गहने व पैसे लेकर फ़रार हो गया। जब रात को बेटे आये तो वृद्ध कराह रहा था। उसने बेटों को आपबीती सुनायी। कहा कि वह तो बैल वाला था।

दो तीन दिन बाद वह किसान हकीम बनकर उसी गाँव में आ गया। उसने आवाज़ लगाना शुरू किया कि जिसके दर्द हो, हड्डियाँ टूटी हो सही करवा लो। ठगों ने उसे बुला लिया। हकीम ने कहा कि मैं जो दवाई लिखूँगा वह आस–पास नहीं मिलेगी। शहर जाना होगा। दवा लेने के लिए तीनों बेटे शहर चले गये।

उस हकीम ने बूढ़े ठग से कहा, ''बोल मेरा बैल कितने का था?'' बूढ़ा ठग घबरा गया। किसान ने ठगों के घर में जो माल बच रहा था उसे भी बटोरा और लेकर फ़रार हो गया। शाम को बेटे दवाई लेकर आये तो उसने बताया कि वह तो हकीम नहीं, बैल वाला था।

अशोक शर्मा, शिक्षक, कटार–फरिया

तेरी मेरी, मेरी तेरी बात

आपने मेरी कहानी क्यों नहीं छापी और दूसरे बच्चों की तो छाप देते हो। अब हम कविता कहानी नहीं लिखेंगे। अब आप हमारी कविता, कहानी नहीं छापते हो। हम सब अच्छी–अच्छी कहानी लिखते तब भी आप हमारी कहानी क्यों नहीं छापते?हमारे तो लिखते–लिखते हाथ ही दुखते हैं तब भी तुम हमारी कहानी, कविता नहीं छापते। **हरिओम, उम्र–10 वर्ष, समूह–इन्द्रधनुष**

मेरी कहानी अबकी बार नहीं छपी तो दुबारा नहीं लिखूँगा और अबकी बार ज़रूर–ज़रूर छापना। **मनेश हस्तीमल, उम्र–11 वर्ष, समूह–इन्द्रधनुष**

हमें मोरंगे बहुत अच्छी लगती है पर इसमें आप अच्छी–अच्छी कहानियों को नहीं छापते हैं। मैंने और चौथमल ने चुटकुले लिखे थे पर मोरंगे में नहीं छपे। उनको ज़रूर छापें। **अजय कुमार सैनी, उम्र–12 वर्ष, समूह–सागर**

अबकी मोरंगें में मेरा पत्र ही आया है और मेरी कहानी, कविता, चित्र कुछ भी नहीं आया है। आप हमारे चित्रों पर दूसरों के नाम क्यों लिख देते हो?आपको पढ़ना नहीं आता है?और अभी तो 2010 का 4 महीना चल रहा है और आप 2009 क्यों लिखते हैं? **श्रीमोहन मीणा, समूह–सागर**
(प्रिय, श्रीमोहन, तुम्हारी बात सही है। हमारी मोरंगे का प्रकाशन कुछ पीछे चल रहा है। इसके लिए मोरंगे टीम को खेद है। –**सम्पादक**)

हमें आपकी मोरंगे बहुत अच्छी लगती है। ये चाँद तारों की फुटबॉल है'–यह मुझे बहुत अच्छी लगी है और राजू, काजू और मैडम भी अच्छी लगी। क्या कर रहे हो मोटे चाचा?बोला कुछ नहीं रो रहा हूँ–अच्छी लगी। **कर्मा मीणा, उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर**

ये चाँद इन तारों की फुटबॉल है मुझे अच्छी लगी। मुनमुन चुहिया, चन्द्रमा और प्रोक्सिमा सेन्टोरी मुझे अच्छी लगी है कि सतरंगी ने मुनमुन से कहा, देखो, इस काम में चाँद हमारी मदद कर सकता है। कहानिका और उम्र दराज़ सम्पादक मुझे अच्छी लगी है। कहानिका ने कमरे के दरवाज़े पर खड़े होकर नमस्ते किया। **प्रियंका मीणा, उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर**

हमने आपकी मोरंगे पढ़ी। हमको बहुत अच्छी लगी। इसमें बच्चों और गुरूजी की कविता कहानियाँ थी और इस मोरंगे में मेरी कहानी भी थी। इस कारण यह मोरंगे बहुत अच्छी लगी। इसमें एक कहानी दुर्गा जी की भी थी वह भी अच्छी लगी और एक अशोक जी की भी थी। वह अपने स्कूल के बारे में थी। वह भी अच्छी थी। प्रभात जी की भी बहुत अच्छी थी। **रीना मीणा, उम्र–12 वर्ष, समूह–सागर**

क्यों ?

फूल फल बनता क्यों ?

पेड़ से फल गिरते क्यों ?

सूरज सुबह दिखता क्यों ?

शाम को छिप जाता क्यों ?

छोटा बड़ा बनता क्यों ?

अंत में मर जाता क्यों ?

मनराज मीना, उम्र–11 वर्ष,
समूह–सागर, जगनपुरा